This is the annual harvest festival in Odisha. Nuakhai is observed to welcome the newly harvested rice of the season. According to the Odia Hindu Calendar, it is observed on Panchami Tithi of the lunar fortnight of the month of Bhadrapada or Bhadraba, the day after Ganesh Chaturthi Festival. The objective of this festival is to celebrate social bonding and strong family ties. The festival has its origin from the Vedic period where the Rishis used to discuss Panchyajna. The Pralambana Yajna is meant for cutting new crops and offering prayers to mother Goddess. People visit their native place during the festival. Nuakhai festival has nine sets of rituals that begin from Behrana to concluding with the Juhar Bhet. This day is considered as auspicious and one of the most important days marked in the calendar of the Western Odisha. Goddess Samalei, the presiding deity of the land is worshipped and is offered food prepared out of new crop or Nabanna.

Sitala Sasthi Yatra is a sacred Hindu Festival celebrated in Western Odisha in which the divine couple's marriage is solemnised. Sitala Sasthi is observed on the sixth day of the Jyestha month during Shukla Pakshya. People observing this festival believe that Lord Shiva represents scorching heat of summer while Goddess Parvati signifies the first rain. This holy/sacred wedding is solemnised for a good monsoon.

The Ministry of Culture of Government of India has accorded National Festival status to **Dhanu Yatra** in 2014. The Yatra is performed in many places in Western Odisha. The major one of these is the original one at Bargarh. It is about the episodes from birth of Lord Sri Krishna to death of demon king Kansa including Krishna and Balaram's visit to Mathura to witness the Dhanu Yatra Ceremony of the king Kansa. The interesting fact is that there is no written script used in these enactments. This has become the World's largest open-air theatre till date.

Sambalpuri Folk Dance, a dance form owes its origin to the Western part of Odisha, particularly the erstwhile Sambalpur District. This place is known for its sculpturesque Odissi dance form. Deriving its name from the presiding deity of Sambalpur 'Samalei', the dance form has a distinct cultural identity of its own. This dance is usually performed during festivals i.e. Dussehra, Nuakhai etc. Accompanied by the rhythm of 'Panchavadya' i.e. the 5 local instruments Dhol, Tasha, Nishaan, Jhanjh and Muhuri coupled with the tinkling of Ghungurus, the creative blends of both traditional and modern scintillating movements punctuated with teaming pauses.

Department of Posts is pleased to issue a set of commemorative postage stamps on Cultural Heritage of Western Odisha and appreciates its rich culture and heritage positively affecting the beliefs, traditions and lifestyle of people.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Sankha Samanta
Text	:	Based on information received from the proponent

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य Denomination	:	500 पैसे (6) 500 p (6)
मुद्रित मिनियेचर शीट Miniature Sheets Printed	:	111000 111000
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।
© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

भारतीय डाक
India Post

पश्चिमी ओडिशा की सांस्कृतिक विरासत
CULTURAL HERITAGE OF WESTERN ODISHA

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



विवरणिका

BROCHURE

पश्चिमी ओडिशा की सांस्कृतिक विरासत

ओडिशा आर्य, द्रविड़ और आदिवासी संस्कृतियों की संगम स्थली है। राज्य के अधिकांश त्योहार, कला और सांस्कृतिक परम्पराएं इन्हीं संस्कृतियों को प्रतिबिंबित करते हैं। संबलपुर, ओडिशा के मनोरम पश्चिमी क्षेत्र का द्वार है। यह एक जीवंत और समृद्ध संस्कृति का केंद्र है। इस क्षेत्र की कला और संस्कृति में नृत्य, संगीत, हस्तशिल्प, आस्था एवं विश्वास, सामाजिक मूल्यों, पारंपरिक प्रथाओं आदि का अनूठा मेल देखने को मिलता है।

lcyijh ck/kk (इकत) शैली में बुनावट से पहले ताने और बाने को टाई एंड डाई शैली से रंगा जाता है। यह, ओडिशा के संबलपुर, बलांगीर, बरगढ़, बौध और सोनपुर जिलों में प्रचलित है। इस शैली से तैयार पारंपरिक परिधानों पर शंख, चक्र, फूल आदि जैसे डिजाइन बनाए जाते हैं। इन डिजाइनों को तैयार करने में लाल, काले और सफेद रंगों का प्रयोग किया जाता है, जोकि उड़िया संस्कृति के साथ–साथ महाप्रभु श्रीजगन्नाथ के मुख वर्ण का भी प्रतीक हैं।

इस महीन बुनावट में प्रयोग की गई पारंपरिक 'बांधा कला' (टाई एंड डाई आर्ट) को 'संबलपुरी इकत' भी कहा जाता है। इस तकनीक में, बुनावट से पहले धागों को एक विशेष शैली में बांधकर रंगा जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में कई सप्ताह लग जाते हैं। इकत साड़ियों की लोकप्रियता 1980–90 के दशक में ओडिशा के बाहर पूरे भारत में भी फैली। इस प्रकार से तैयार यार्न (सूत) को 'बांधा' कहा जाता है। माना जाता है कि ओडिशा में यह कला उत्तरी भारत के भुलिया समुदाय के साथ आई, जो वर्ष 1192 में उत्तर भारत से आकर यहां बस गए थे। बांधा शैली में मुख्य रूप से वनस्पतियों से तैयार प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। बांधा साड़ियों को 'भुलिया कप्ता' के नाम से भी जाना जाता है।

संबलपुरी कपड़े की प्रसिद्धि का श्रेय श्री राधाश्याम मेहेर के अग्रगामी प्रयासों को जाता है, जो बुनकरों के कौशल और उत्पादों की गुणवत्ता में नवीन परिवर्तन लाए। अन्य निपुण और विशेषज्ञ बुनकर जिन्होंने संबलपुरी वस्त्रों के विकास की दिशा में योगदान दिया उनमें पद्म श्री कैलाश चन्द्र मेहेर, पद्म श्री कुंज बिहारी मेहेर, पद्म श्री चतुर्भुज मेहेर और पद्म श्री क्रुतार्थ आचार्य के साथ–साथ हथकरघा प्रौद्योगिकी के जानकार श्री रामकृष्ण मेहेर (राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता) के नाम शामिल हैं। बांधा कारीगर 'एकस्ट्रा वार्प' और 'एकस्ट्रा वेफ्ट' काम में भी अत्यंत निपुण होते हैं, जो इस शैली से तैयार लगभग सभी कपड़ों में देखने को मिलता है। राधाश्याम मेहेर ने बांधा कला का प्रयोग करते हुए खादी का कपड़ा भी तैयार किया। श्री मेहेर ने संबलपुरी वस्त्रों पर शोध के साथ–साथ उनके उत्पादन और विपणन के लिए संबलपुर में एक प्रोपराइटरशिप भी स्थापित की।

बांधा कला के विकास और लोकप्रियता में श्री राधाश्याम मेहेर के अतुलनीय योगदान को देखते हुए वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार ने उनकी जयंती अर्थात् 20 नवम्बर को वस्त्र प्रदर्शनियां प्रायोजित की, जिनका आयोजन ओड़िशा सरकार के निदेशक, वस्त्र द्वारा किया गया। संबलपुरी साड़ियों के गढ़ के रूप में प्रसिद्ध सोनपुर जिले में स्थित सागरपल्ली, बुनकरों के सबसे बड़े गांवों में से एक है, जिसमें लगभग 500 भुलिया (बुनकर) परिवार रहते हैं। हथकरघा बुनकरों के अन्य गांवों में बरपल्ली, तराव, बीजेपुर, पटनागढ़ और बरगढ़ शामिल हैं।

uvk[kbZ io dी परंपरा 12वीं सदी से चली आ रही है। यह पर्व पश्चिमी ओड़िशा के संबलपुर, बलांगीर, बरगढ़, सुन्दरगढ़, कालाहांडी के साथ–साथ सीमावर्ती झारखंड के सिमडेगा में भी पूरे हर्षोल्लास से मनाया जाता है। ओड़िशा के आर्थिक विकास में कृषि का अत्यंत महत्व है। पश्चिमी ओड़िशा में मनाया जाने वाला यह नुआखाई पर्व, कृषि से ही जुड़ा है।

यह, ओडिशा का फसल कटाई से जुड़ा वार्षिक उत्सव है। इसे धान की नई फसल के स्वागत में मनाया जाता है। उड़िया हिन्दू पंचांग के अनुसार, यह पर्व भाद्रपद या भाद्रबा के शुक्ल पक्ष की पंचम तिथि अर्थात् गणेश चतुर्थी के अगले दिन मनाया जाता है। यह पर्व सामाजिक जुड़ाव और मजबूत परिवारिक संबंधों का प्रतीक है। इस पर्व की शुरुआत वैदिक काल से हुई मानी जाती है, जब ऋषि–मुनि पंचयज्ञ पर चर्चा करते थे। प्रालंबन यज्ञ में नई फसल की कटाई कर देवी मां की पूजा की जाती है। आमजन इस पर्व के दौरान अपने मूल निवासस्थान जाते हैं। नुआखाई पर्व में नौ अनुष्ठान शामिल हैं जो बेहराना से शुरू होकर जुहार भेंट पर समाप्त होते हैं। इस दिन को बहुत शुभ माना जाता है। यह दिन पश्चिमी ओडिशा के पंचांग में सबसे पवित्र एवं महत्वपूर्ण दिनों में से एक है। इस दिन भूमि की अधिष्ठात्री देवी समलेई की पूजा–अर्चना की जाती है और उन्हें नई फसल से तैयार किया गया भोजन या नबन्ना का प्रसाद अर्पित किया जाता है।

'kh"Bh ;k=k एक पवित्र हिन्दू पर्व है, जो पश्चिमी ओडिशा में मनाया जाता है। यह शिव और शक्ति के विवाह का द्योतक है। शीतल षष्ठी का आयोजन शुक्ल पक्ष के ज्येष्ठ माह की षष्ठी तिथि को किया जाता है। इस पर्व को मनाने वाले लोगों की यह आस्था एवं विश्वास है कि भगवान शिव, ग्रीष्म ऋतु के ताप और मां पार्वती पहली वर्षा की द्योतक हैं। यह धार्मिक और पवित्र विवाहोत्सव उत्तम मानसून के लिए मनाया जाता है।

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने 2014 में /kq ;k=k को राष्ट्रीय पर्व का दर्जा प्रदान किया। इस यात्रा का आयोजन, पश्चिमी ओडिशा के कई स्थानों, विशेषकर बरगढ़ में किया जाता है। इस दौरान, भगवान श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर क्रूर कंस के वध का मंचन किया जाता है। साथ ही इस आयोजन में राजा कंस की धनु यात्रा में शामिल होने के लिए भगवान श्रीकृष्ण और बलराम की मथुरा यात्रा को भी दर्शाया जाता है। इस पर्व का सबसे रोचक तथ्य यह है कि इन मंचनों के लिए किसी लिखित पटकथा का प्रयोग नहीं किया जाता। आज के समय में यह विश्व का सबसे बड़ा ओपनएयर थियेटर (मुक्ताकाश नाट्यमंच) है।

lcyijh ykd नृत्य एक नृत्य शैली है, जिसकी शुरुआत ओडिशा के पश्चिमी भाग (पूर्ववर्ती संबलपुर जिला) में हुई। संबलपुर, मूर्तियों की मुद्राओं से सुसज्जित ओडिशी नृत्य शैली के लिए जाना जाता है। इस नृत्य शैली का नाम संबलपुर की स्थानीय देवी 'समलेई' से लिया गया है। इस नृत्य शैली की अपनी एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है। सामान्यतः यह नृत्य दशहरा, नुआखाई आदि जैसे त्योहारों पर किया जाता है। इस नृत्य में पंचवाद्यों अर्थात् पांच स्थानीय वाद्ययंत्रों–ढोल, ताशा, निशान, झांझ और मुहुरी का इस्तेमाल किया जाता है। इस शैली के अंतर्गत नर्तक, घुंघरूओं की झंकार पर परंपरा और आधुनिकता से युक्त शैली की चमत्कृत कर देने वाली मुद्राएं प्रस्तुत करते हैं।

डाक विभाग, पश्चिमी ओडिशा की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और वहां के लोगों की आस्था एवं विश्वास, परंपराओं और जीवन शैली को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाली इसकी समृद्ध विरासत को रेखांकित करते हुए 'पश्चिमी ओडिशा की सांस्कृतिक विरासत' विषय पर स्मारक डाक–टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/ विरूपण कैशे : श्री शंख सामंत

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सूचना के आधार पर

Cultural Heritage of Western Odisha

Odisha is a confluence of the Aryan, Dravidian and Adivasi cultures. Most festivals, art and cultural traditions in the state bring out some parts of these cultures. Sambalpur serves as the gateway to the enchanting western zone of Odisha. It is the epicentre of a very high profile and rich culture. Its art and culture is a unique proposition of dance, music, handicraft, beliefs, social values, traditional practices etc.

Sambalpuri Bandha (Ikat) work or Sambalpuri work contains the warp and the weft tie-dyed before weaving. This is produced in Sambalpur, Balangir, Bargarh, Boudh and Sonepur Districts of Odisha. The traditional garment has the motifs like Sankha (conch-shell), Chakra (wheel), Phula (flower). These have deep symbolism with the native Odia colours i.e., red, black and white representing Odia culture along with the colour of the face of Mahaprabhu Shree Jagannatha.

The traditional craftsmanship of 'Bandhakala', the tie-dye art reflected in their intricate weaves, also known as 'Sambalpuri Ikat'. In this technique, the threads are first tie-dyed and later woven into a fabric, with the entire process taking as long as many weeks. The Ikat sarees gained popularity outside Odisha in the 1980-90s. The yarns or set of yarns so produced are called 'Bandha'. This art is believed to have been migrated to Odisha along with Bhulia community who fled Northern India in the year 1192 A.D. The colours consisted mainly of vegetable colours. The Bandha Sarees were known as 'Bhulia Kapta'.

Sambalpuri fabric owes a great deal to the pioneering efforts of Shri Radhashyam Meher, who brought about a radical movement in the skills of the craftsmen and the quality of the products. Other master craftsmen who contributed to the development of Sambalpuri Textiles were Padma Shri Kailash Chandra Meher, Padma Shri Kunja Bihari Meher, Padma Shri Chaturbhuja Meher and Padma Shri Krutarth Acharya along with Handloom Technologist Shri Ramakrushna Meher (National Awardee). Bandha craftsmen are also masters of the 'extra warp' and 'extra weft' style of designing which can be seen in almost all forms of Bandha Textiles. Radhashyam Meher also produced Khadi textiles using Bandha Art. Shri Meher has established his propriety at Sambalpur for the research, production and marketing of Sambalpuri Textiles.

Acknowledging Radhashyam Meher's unparalleled contributions to the growth and popularity of Bandha art, the Ministry of Textiles of Government of India has sponsored Textile Exhibition coinciding with his birth anniversary on 20th November and organised by the Director of Textiles of Government Of Odisha. Sagarpalli is a large village hosting around 500 Bhulias (weaver families). This is one of the largest weaving villages in Sonepur district, a bastion of Sambalpuri sarees. Other areas affluent with Handloom Weavers are Barpalli, Tarava, Bijepur, Patnagarh and Bargarh.

Nuakhai festival has been a tradition since 12th century A.D. People of Western Odisha, spreading across Sambalpur, Balangir, Bargarh, Sundargarh, Kalahandi and adjoining areas of Simdega in Jharkhand celebrate this festival with great joy and happiness. Western Odisha celebrates this agricultural festival which is known as 'Nuakhai'. The importance of agriculture is deeply embedded in the economic development of this State.